सृजन का भजन

मानव सभ्यता का विकास सृजन की, रचनात्मकता की और आविष्कारों की महान गाथा है। सृजन, विकास का मूल प्रेरक है। जीवन के हर क्षेत्र में रोज नये-नये सृजन किये जा रहे हैं। सृजन एक बहुआयामी धारणा है। प्रयोगशाला में एक वैज्ञानिक जीवन की प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। नई-नई खोज करता है। उसी प्रकार वास्तुकार नये-नये भवनों की निर्माण प्रक्रिया की खोज करता है। नई परिकल्पनाएं संजोता है। एक व्यापारी अपने लिये नई योजनाएं बनाता है। नवीन क्षेत्रों से नयी संभावनाएं तलाशता है। साहित्यकार मानव जीवन की नयी संवेदनाओं की अभिव्यक्ति करता है। हर बार प्रस्तुतीकरण के नये-नये ढंग ढूंढता है। चित्रकार अपनी अभिव्यक्ति को चिन्हों के माध्यम से मूर्त रूप देता है। सृजन जीवन को आनन्द की नूतन अनुभूति प्रदान करता है। रचनाकार मूलतः दो प्रकार के होते हैं : एक ईश्वर प्रदत्त अभूतपूर्व क्षमताओं वाले रचनाकार और दूसरे अपनी क्षमताओं का धीरे-धीरे विकास करके उच्च श्रेणी तक पहुंचने वाले। यदि ध्यान से देखें तो मूलतः दोनों प्रकार के रचनाकार एक ही तरह के लोग होते हैं। अपनी क्षमताओं का विकास करने वाले पहले तरह के त्वरित विकास वाले लोग और दूसरी तरह के धीरे-धीरे सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ने वाले लोग। संरचना की एक प्रक्रिया होती है। इसके लिए समय चाहिए। यदि समय का सदुपयोग नहीं किया गया तो सारी क्षमताओं के होने के बावजूद कोई सर्जनात्मक कार्य नहीं किया जा सकता। यदि धन, सुविधाएं और पारिवारिक परिवेश उपलब्ध हैं तो रचनाधर्मिता के लिए आगे का मार्ग सुगम हो जाता है। यदि नहीं हैं तो भी लगातार परिमार्जन से, अभ्यास से, दृढ़ विश्वास से सृजन संभव है। महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि अधिकतर अधिकांश आविष्कार एवं अविस्मरणीय रचनाएं पर्णकुटियों में ही मूर्त रूप में आयीं न कि महलों में।

भारत में अनेक ऐसी प्रतिभाओं ने जन्म लिया है जिनका जीवन अभावों से घिरा रहा, मगर इस सब के बावजूद ये प्रतिभाएं मानव समाज के लिए अद्वितीय कार्य करने में सफल रहीं। हर गोबिन्द खुराना के पिता पटवारी थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मुल्तान के डीएवी हाई स्कूल में हुयी। 1968 में दो अन्य वैज्ञानिकों के साथ उन्होंने विज्ञान की दुनिया का सर्वोच्च पुरस्कार (नोबल पुरस्कार) प्राप्त किया। डा. शांति स्वरूप भटनागर पंजाब के एक गांव में पैदा हुये थे। बचपन में ही उनके पिता का देहान्त हो गया था। अपने जीवन के 13 वर्ष उन्होंने अपने नाना के यहां बुलन्दशहर में बिताए। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के वे संस्थापक निदेशक रहे। भारत का नोबल पुरस्कार समझा जाने वाला शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार उनकी स्मृति में ही दिया जाता है। आज हिग्स बोसॉन कणों की चर्चा पूरे विश्व में व्याप्त है। पर क्या आप जानते हैं कि बोसॉन के जनक सत्येन्द्र नाथ बोस के पिता रेलवे में एकाउंटेंट थे। प्रख्यात भौतिक शास्त्री और आधुनिक एस्ट्रो फिजिक्स के प्रणेता, मेघनाद साहा का जन्म ढाका के निकट एक गांव में हुआ था। उनके पिता किराना की दुकान चलाते थे। मिडिल स्कूल में पढ़ने के लिये वे एक डाक्टर के यहां रहते थे और किराए के रूप में उनको डाक्टर साहब के घर का काम करना पड़ता था। प्रख्यात गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन तो ढंग से पढ़ भी नहीं पाये थे। तमिलनाडु के एक गांव में पैदा हुये रामानुजन के पिता कपड़े की दुकान में बाबू थे। बिना पारम्परिक डिग्री के भी उनको रॉयल सोसायटी का सदस्य बनाया गया। भारतीय मिसाइल तकनीकी के जनक डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को कौन नहीं जानता। एक छोटे से परिवार में जन्में तथा विषम परिस्थितियों में रहते हुये भी डा. कलाम ने अपनी लगन एवं दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण सृजन की चरम सीमा को छुआ और आज करोड़ों लोगों के प्रेरणा स्रोत हैं। ये साधारण परिवारों में जन्मे लोग असाधारण कैसे हो गये। इन लोगों की अपनी विशेषता थी, इनका दृढ़ निश्चय, लगन, अनुशासन और अपनी क्षमताओं के अनुसार योजनाएं क्रियान्वित करना। प्रख्यात क्रिकेट खिलाड़ी सुनील गवास्कर से जब किसी ने उनकी असाधारण सफलता का राज जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि वह रहस्य है 3 डी, यानी डिसिप्लिन, डिवोशन एवं डेडिकेशन (अनुशासन, निष्ठा एवं समर्पण)। सूचना प्रौद्योगिकी की बात करें तो पता चलता है कि माइक्रोसॉफ्ट, गुगल, फेसबुक एवं ट्विटर के संस्थापकों के पास कोई बड़ी पूंजी नहीं थी। अगर थी तो वह थी गहन चिन्तन, सही आयोजना, लगन, दृढ़ निश्चय और मस्तिष्क की क्षमताओं का उपयोग।

यदि आपने कुछ धन बचाया है तो वो आपकी अतिरिक्त आय के बराबर है। कुछ ऐसा ही समय के बारे में भी है। यदि आप अपने दैनिक कार्यक्रम से कुछ समय बचाते हैं तो यह ऐसा ही है जैसे कि आपने अपने उपयोगी समय में अतिरिक्त समय जोड़ दिया है और आप महसूस करने लगते हैं कि आपका दिन 24 घंटे से अधिक का होने लगा है। किसी की नयी प्रणाली, विधि या आविष्कार के लिये कुछ ज्ञान आवश्यक है। इसके लिये अध्ययन आवश्यक है। यदि आपको कुछ नया करना है तो आपको यह जानना होगा कि अब तक उस क्षेत्र में क्या-क्या हो चुका है। उदाहरण के लिये यदि किसी प्रणाली का आविष्कार हो चुका है तो बार-बार उसी प्रणाली के लिये प्रयोग करना, सामान्य परिस्थितियों में अनावश्यक होगा। इस सब के लिये आपको गहन अध्ययन करना होगा। मात्र अध्ययन ही पर्याप्त नहीं होगा बल्कि जो भी पढ़ा है, या सीखा है, उसे ऐसे ढंग से संगृहीत करना होगा कि आवश्यकता पड़ने पर वह उपलब्ध हो सके। इसी प्रकार चिन्तन के लिये मस्तिष्क का पूर्ण रूप से तनाव मुक्त होना परम आवश्यक है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है इसलिए शरीर का स्वस्थ रहना भी आवश्यक है। लेकिन मस्तिष्क के संपोषण के लिये आवश्यक है उचित आहार। आज बुद्धि एवं ज्ञान को आजीविका का सबसे बड़ा स्रोत माना जाता है। सारे वैज्ञानिक, व्यापारी, संगणक, प्रोग्रामर, लेखक, कवि, चित्रकार इत्यादि बुद्धिकर्मी एवं मस्तिष्ककर्मी हैं। पर मस्तिष्क के रख-रखाव पर व चिन्तन एवं अध्ययन की तकनीक पर बहुत कम सामग्री उपलब्ध है। बुद्धिकर्मियों की मार्गदर्शिका (ब्रेन वर्कर्स हैंडबुक) एक ऐसी ही कृति है जो इन्हीं विषयों पर केन्द्रित है। इसका सृजन जर्मन भाषा में कर्ट काफमैन द्वारा प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व किया गया था। तत्पश्चात् इसका अंग्रेजी संस्करण आया। इस कृति का मलयालम में अनुवाद भी बहुत ही लोकप्रिय साबित हुआ है। अब इस कृति के हिन्दी में संवर्धित एवं अनुवादित संस्करण को प्रकाशित किये जाने की योजना है। विज्ञान प्रगति के पाठकों तक इस अनमोल कृति का लाभ पहुंचाने की दृष्टि से इसका धारावाहिक प्रकाशन 'चिन्तन मनन' के अंतर्गत किया जा रहा है। प्रथम कड़ी के रूप में 'समय का सदुपयोग' नामक लेख को इस अंक में सम्मिलित किया गया है। आशा है मस्तिष्क के परिमार्जन, रख-रखाव एवं सर्जनात्मक चिन्तन की यह यात्रा आनन्दमयी रहेगी और विज्ञान प्रगति के पाठक इसके सार को आत्मसात् कर राष्ट्र की सृजनात्मक धारा को और समृद्ध करेंगे।

निस्केयर
NISCAIR

जुलाई 2013

सम्पादक
प्रदीप शर्मा
सह सम्पादक
डा. बालक राम
प्रोडक्शन अधिकारी
सुप्रिया गुप्ता
गणेश साहनी
एस. पी. सिंह
कला अधिकारी
नीरू विजन
योगेश कुमार आनंद
कम्पोजिंग
मीरा देवी
वरिष्ठ बिक्री एवं विज्ञापन अधिकारी
परवेज़ अली खान
वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा

जुलाई 2013
विज्ञान प्रगति

मूल्य
एक अंक : 30.00 रुपये
एक वर्ष : 300.00 रुपये
दो वर्ष : 570.00 रुपये
तीन वर्ष : 810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 90$

शिकायत : 25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 25846301, 04-07/370; 25841769
प्रोडक्शन : 25847353, 25846301, 04-07/217, 284
विज्ञापन : 25845359, बिक्री : 25841647, 25846301, 04-07/335, 295 फैक्स : 25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http:/www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों और मतों के लिये सी एस आई आर - राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।